Twitter Thread by Shakta

Shakta
@LearningShakta

Thread on debunking a claim that Maa Radha is fake/illusionary

One of the texts that mentions Maa radha is Garga Samhita (A treatise written on Lord Krishna's life by sage Garg)

In this maa radha says that her darshan is rare

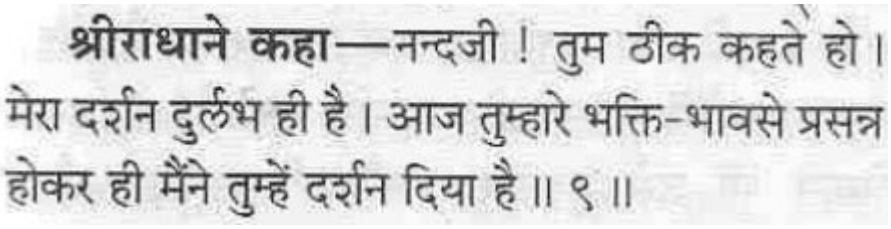

श्रीराधाने कहा—नन्दजी ! तुम ठीक कहते हो। मेरा दर्शन दुर्लभ ही है। आज तुम्हारे भक्ति-भावसे प्रसन्न होकर ही मैंने तुम्हें दर्शन दिया है॥ ९॥

Garg Samhita Further mentions R■dh■-Krishna Vivah

श्रीहरिसे इस प्रकार कहा—'प्रभो ! मुझे अपने युगलचरणोंकी भक्ति ही दक्षिणाके रूपमें प्रदान कीजिये।' श्रीहरिने 'तथास्तु' कहकर उन्हें अभीष्ट वरदान दे दिया। तब ब्रह्माजीने श्रीराधिकाके मङ्गलमय युगल-चरणारविन्दोंको दोनों हाथों और मस्तकसे बारंबार प्रणाम करके अपने धामको प्रस्थान किया। उस समय प्रणाम करके जाते हुए ब्रह्माजीके मनमें अत्यन्त हर्षोल्लास छा रहा था ॥ ३५—३८ ॥

तदनन्तर निकुञ्जभवनमें प्रियतमाद्वारा अर्पित दिव्य मनोरम चतुर्विध[1] अन्न परमात्मा श्रीहरिने हँसते-हँसते ग्रहण किया और श्रीराधाने भी श्रीकृष्णके हाथोंसे चतुर्विध अन्न ग्रहण करके उनकी दी हुई पान-सुपारी भी खायी। इसके बाद श्रीहरि अपने हाथसे प्रियाका हाथ पकड़कर कुञ्जकी ओर चले। वे दोनों मधुर

तत्पश्चात् श्रीकृष्णने यमुनामें प्रवेश करके वृषभानु-नन्दिनीके साथ विहार किया। वे यमुनाजलमें खिले हुए लक्षदल कमलको राधाके हाथसे छीनकर भाग चले। तब श्रीराधाने भी हँसते-हँसते उनका पीछा किया और उनका पीताम्बर, वंशी तथा बेंतकी छड़ी अपने अधिकारमें कर लीं। श्रीहरि कहने लगे—'मेरी बाँसुरी दे दो।' तब राधाने उत्तर दिया—'मेरा कमल लौटा दो।' तब देवेश्वर श्रीकृष्णने उन्हें कमल दे दिया। फिर राधाने भी पीताम्बर, वंशी और बेंत श्रीहरिके हाथमें लौटा दिये। इसके बाद फिर यमुनाके किनारे उनकी मनोहर लीलाएँ होने लगीं ॥ ४६—४८ ॥

तदनन्तर भाण्डीर-वनमें जाकर व्रज-गोप-रत्न श्रीनन्दनन्दनने अपने हाथोंसे प्रियाका मनोहर शृङ्गार किया—उनके मुखपर पत्र-रचना की, दोनों पैरोंमें

१. भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य—ये ही चार प्रकारके अन्न हैं।

महावर लगाया, नेत्रोंमें काजलकी पतली रेखा खींच दी तथा उत्तमोत्तम रत्नों और फूलोंसे भी उनका शृङ्गार किया। इसके बाद जब श्रीराधा भी श्रीहरिको शृङ्गार धारण करानेके लिये उद्यत हुईं, उसी समय श्रीकृष्ण अपने किशोररूपको त्यागकर छोटे-से बालक बन गये। नन्दने जिस शिशुको जिस रूपमें राधाके हाथोंमें दिया था, उसी रूपमें वे धरतीपर लोटने और भयसे रोने लगे। श्रीहरिको इस रूपमें देखकर श्रीराधिका भी तत्काल विलाप करने लगीं और बोलीं—'हरे ! मुझपर माया क्यों फैलाते हो ?' इस प्रकार विषादग्रस्त होकर रोती हुई श्रीराधासे सहसा आकाशवाणीने कहा—'राधे ! इस समय सोच न करो। तुम्हारा मनोरथ कुछ कालके पश्चात् पूर्ण होगा' ॥ ४९—५२ ॥

यह सुनकर श्रीराधा शिशुरूपधारी श्रीकृष्णको लेकर तुरंत व्रजराजकी धर्मपत्नी यशोदाजीके घर गयीं और उनके हाथमें बालकको देकर बोलीं—'आपके पतिदेवने मार्गमें इस बालकको मुझे दे दिया था।' उस समय नन्द-गृहिणीने श्रीराधासे कहा—'वृषभानु-नन्दिनि राधे ! तुम धन्य हो; क्योंकि तुमने इस समय, जब कि आकाश मेघोंकी घटासे आच्छन्न है, वनके भीतर भयभीत हुए मेरे नन्हे-से लालाकी पूर्णतया रक्षा की है।' यों कहकर नन्दरानीने श्रीराधाका भलीभाँति सत्कार किया और उनके सद्गुणोंकी प्रशंसा की। इससे वृषभानुनन्दिनी श्रीराधाको बड़ी प्रसन्नता हुई। वे यशोदाजीकी आज्ञा ले धीरे-धीरे अपने घर चली गयीं ॥ ५३—५५ ॥

राजन् इस प्रकार श्रीराधाके विवाहकी परम मङ्गल-मयी गुप्त कथाका यहाँ वर्णन किया गया। जो लोग इसे सुनते-पढ़ते अथवा सुनाते हैं, उन्हें कभी पापोंका स्पर्श नहीं प्राप्त होता ॥ ५६ ॥

Another interesting event from Garg Samhita ■

इकतालीसवाँ अध्याय

श्रीराधा और श्रीकृष्णका मिलन

श्रीगर्गजी कहते हैं—राजन्! संध्याके समय श्रीराधाने नन्दनन्दन श्रीकृष्णको बुलवाया। उनका आमन्त्रण पाकर नित्य एकान्तस्थलमें, जहाँ शीतल कदलीवन था, श्रीकृष्ण वहाँ गये। कदलीवनमें एक मेघ-महल बना था, जिसमें चन्दनपङ्कका छिड़काव हुआ था। केलेके पत्तोंसे सज्जित होनेके कारण वह भवन बड़ा मनोहर लगता था। अपनी विशालतासे सुशोभित उस मेघभवनमें यमुनाजलका स्पर्श करके बहती हुई वायु पानीके फुहारे बिखेरती रहती थी। श्रीराधिकाका ऐसा सुन्दर सारा मेघमन्दिर उनके विरह-दुःखकी आगसे सदा भस्मीभूत हुआ-सा प्रतीत होता था। नरेश्वर! गोलोकमें प्राप्त हुए श्रीदामाके शापसे वृषभानुनन्दिनीको श्रीकृष्णविरहका दुःख भोगना पड़ रहा था। उस दशामें भी वे वहाँ अपने शरीरकी रक्षा इसलिये कर रही थीं कि किसी-न-किसी दिन श्रीकृष्ण यहाँ आयेंगे॥ १—४॥

सखीके मुखसे जब यह संवाद मिला कि श्रीकृष्ण अपने विपिनमें पधारे हैं, तब श्रीवृषभानुनन्दिनी उन्हें लानेके लिये अपने श्रेष्ठ आसनसे तत्काल उठकर खड़ी हो गयीं और सहेलियोंके साथ दरवाजेपर आयीं। व्रजेश्वरी श्यामाने व्रजवल्लभ श्यामसुन्दर श्रीकृष्णको उनका कुशल-समाचार पूछते हुए आसन दिया और क्रमशः पाद्य, अर्घ्य आदि उपचार अर्पित किये। नरेश्वर! परिपूर्णतमा श्रीराधाने परिपूर्णतम श्रीकृष्णका दर्शन पाकर विरहजनित दुःखको त्याग दिया और संयोग पाकर वे हर्षोल्लाससे भर गयीं। उन्होंने वस्त्र, आभूषण और चन्दनसे अपना शृङ्गार किया। प्राणनाथ श्रीकृष्णके कुशस्थली चले जानेके बादसे श्रीराधाने कभी शृङ्गार धारण नहीं किया था। इस दिनसे पहले उन्होंने कभी पान नहीं खाया, मिष्टान्न भोजन नहीं किया, शय्यापर नहीं सोयीं और कभी हास-परिहास नहीं किया था। इस समय सिंहासनपर विराजमान मदनमोहनदेवसे श्रीराधाने हर्षके आँसू बहाते हुए गद्गद कण्ठसे पूछा॥ ५—१०॥

श्रीराधा बोलीं—हृषीकेश! तुम तो साक्षात् गोकुलेश्वर हो; फिर गोकुल और मथुरा छोड़कर कुशस्थली क्यों चले गये? इसका कारण मुझे बताओ। नाथ! तुम्हारे वियोगसे मुझे एक-एक क्षण युगके समान जान पड़ता है। एक-एक घड़ी एक-एक मन्वन्तरके तुल्य प्रतीत होती है और एक दिन मेरे लिये दो परार्धके समान व्यतीत होता है। देव! किस कुसमयमें मुझे दुःखदायी विरह प्राप्त हुआ, जिसके कारण मैं तुम्हारे सुखदायी चरणारविन्दोंका दर्शन नहीं कर पाती हूँ। जैसे सीता श्रीरामको और हंसिनी मानसरोवरको चाहती है, उसी तरह मैं तुम मानदाता रासेश्वरसे नित्यमिलनकी इच्छा रखती हूँ। तुम तो सर्वज्ञ हो, सब कुछ जानते हो। मैं तुमसे अपना दुःख क्या कहूँ? नाथ! सौ वर्ष बीत गये, किंतु मेरे वियोगका अन्त नहीं हुआ॥ ११—१५॥

राजन्! अपने परम प्रियतम स्वामी श्यामसुन्दरसे ऐसा वचन कहकर स्वामिनी श्रीराधा विरहावस्थाके दुःखोंको स्मरण करके अत्यन्त खिन्न हो फूट-फूटकर

रोने लगीं। प्रियाको रोते देख प्रियतम श्रीकृष्णने अपने वचनोंद्वारा उनके मानसिक क्लेशको शान्त करते हुए यह प्रिय बात कही॥ १६-१७॥

श्रीकृष्ण बोले—प्रिये राधे! यह शोक शरीरको सुखा देनेवाला है; अतः तुम्हें शोक नहीं करना चाहिये। हम दोनोंका तेज एक है, जो दो रूपोंमें प्रकट हुआ है; इस बातको ऋषि-महर्षि जानते हैं। जहाँ मैं हूँ, वहाँ सदा तुम हो और जहाँ तुम हो, वहाँ सदा मैं हूँ। हम दोनोंमें प्रकृति और पुरुषकी भाँति कभी वियोग नहीं होता। राधे! जो नराधम हम दोनोंके बीचमें भेद देखते हैं, वे शरीरका अन्त होनेपर अपनी उस दोषदृष्टिके कारण नरकोंमें पड़ते हैं*। श्रीराधिके! जैसे चकई प्रतिदिन प्रातःकाल अपने प्यारे चक्रवाकको देखती है, उसी तरह आजसे तुम भी मुझे सदा अपने निकट देखोगी। प्राणवल्लभे! थोड़े ही दिनोंके बाद मैं समस्त गोप-गोपियोंके और तुम्हारे साथ अविनाशी ब्रह्मस्वरूप श्रीगोलोकधाममें चलूँगा॥ १८—२२॥

श्रीगर्गजी कहते हैं—राजन्! माधवकी यह बात सुनकर गोपियोंसहित श्रीराधिकाने प्रसन्न हो प्यारे श्यामसुन्दरका उसी प्रकार पूजन किया, जैसे रमादेवी रमापतिकी पूजा करती हैं। नरेश्वर! श्रीराधिकाने पुनः श्रीकृष्णसे रासक्रीडाके लिये प्रार्थना की। तब प्रसन्न हुए रासेश्वरने वृन्दावनमें रास करनेका विचार किया॥ २३-२४॥

इस प्रकार श्रीगर्गसंहिताके अन्तर्गत अश्वमेधखण्डमें 'श्रीराधा-कृष्णका मिलन' नामक इकतालीसवाँ अध्याय पूरा हुआ॥ ४१॥

—::०::—

Narada pancharatra Says Maa R■dh■ is the Goddess Maha Laxmi and Maa Saraswati .

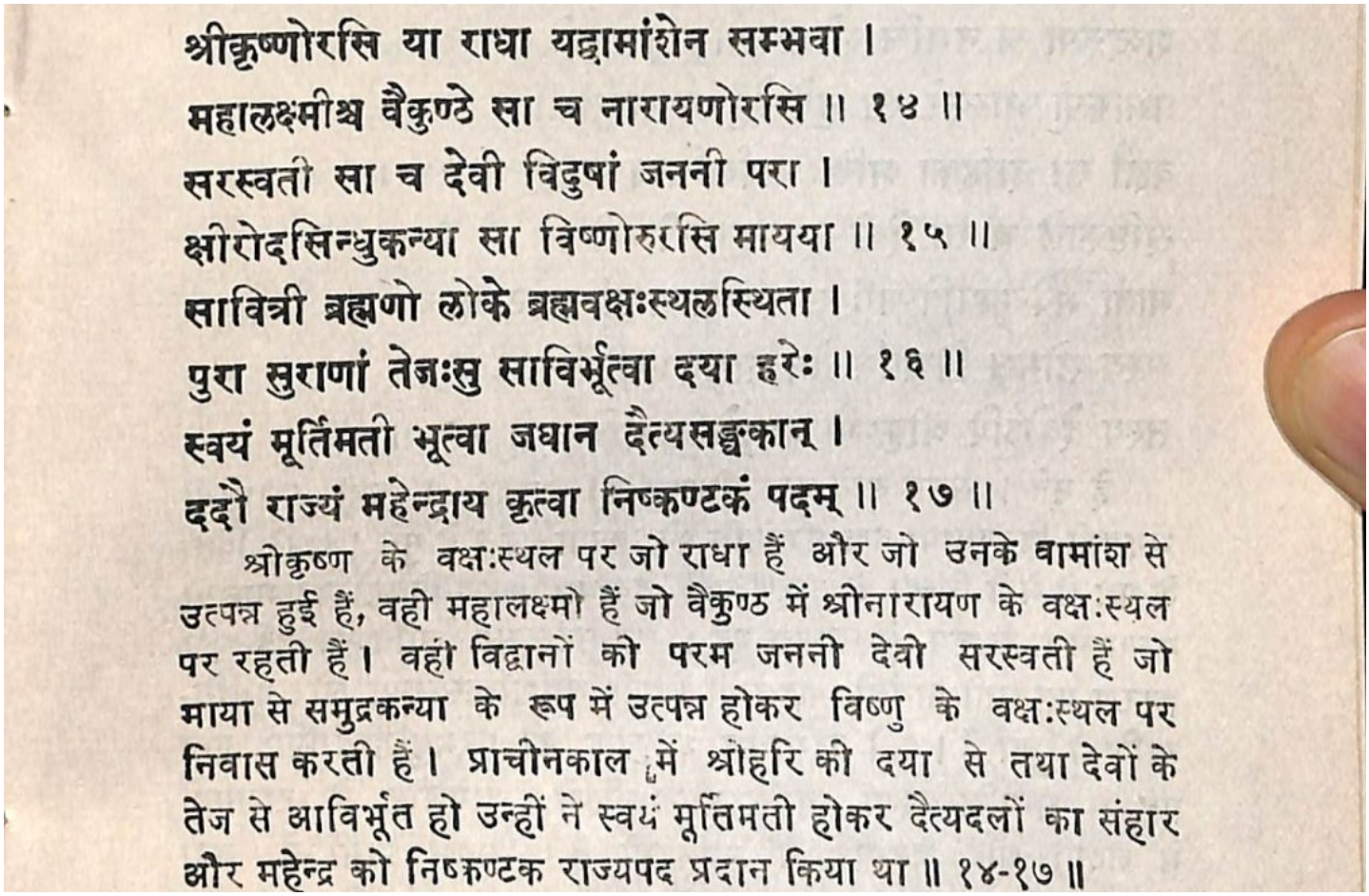

श्रीकृष्णोरसि या राधा यद्वामांशेन सम्भवा ।
महालक्ष्मीश्च वैकुण्ठे सा च नारायणोरसि ॥ १४ ॥
सरस्वती सा च देवी विदुषां जननी परा ।
क्षीरोदसिन्धुकन्या सा विष्णोरुरसि मायया ॥ १५ ॥
सावित्री ब्रह्मणो लोके ब्रह्मवक्षःस्थलस्थिता ।
पुरा सुराणां तेजःसु साविर्भूत्वा दया हरेः ॥ १६ ॥
स्वयं मूर्तिमती भूत्वा जघान दैत्यसङ्घकान् ।
ददौ राज्यं महेन्द्राय कृत्वा निष्कण्टकं पदम् ॥ १७ ॥

श्रीकृष्ण के वक्षःस्थल पर जो राधा हैं और जो उनके वामांश से उत्पन्न हुई हैं, वही महालक्ष्मी हैं जो वैकुण्ठ में श्रीनारायण के वक्षःस्थल पर रहती हैं। वहीं विद्वानों की परम जननी देवी सरस्वती हैं जो माया से समुद्रकन्या के रूप में उत्पन्न होकर विष्णु के वक्षःस्थल पर निवास करती हैं। प्राचीनकाल में श्रीहरि की दया से तथा देवों के तेज से आविर्भूत हो उन्हीं ने स्वयं मूर्तिमती होकर दैत्यदलों का संहार और महेन्द्र को निष्कण्टक राज्यपद प्रदान किया था ॥ १४-१७ ॥

Lord Krishna is referred as father of universe while Maa R■dh■ is referred as Mother of Universe.

विपरीतं यदि पठेत् ब्रह्महत्यां लभेद्ध्रुवम् ॥ ६ ॥
श्रीकृष्णो जगतां तातो जगन्माता च राधिका ।
पितुः सद्गुणे माता वन्द्या पूज्या गरीयसी ॥ ७ ॥
दैवदोषेण महता ये च निन्दन्ति राधिकाम् ।
वामाचाराश्च मूर्खाश्च पापिनश्च हरिद्विषः ॥ ८ ॥
कुम्भीपाके तप्ततैले तिष्ठन्तिब्रह्मणः शतम् ।
इहैव तद्वंशहानिः सर्वनाशाय कल्पते ॥ ९ ॥
भवेद्रोगी च पतितो विघ्नस्तस्य पदे पदे ।
हरिणोक्तं ब्रह्मक्षेत्रे मया च ब्रह्मणा श्रुतम् ॥ १० ॥

आदि में राधा का उच्चारण करना चाहिये। उसके बाद 'माधव' या 'कृष्ण' का उच्चारण करना चाहिये। जो इसके विपरीत पढ़ता है उसे निश्चित रूप से ब्रह्महत्या का पाप लगता है। श्रीकृष्ण जगत के पिता और राधिका जगन्माता हैं। पिता से माता सौगुनी अधिक महत्त्वपूर्ण, पूजनीय और वन्दनीय है। यदि दैवदोष (पूर्वकर्मों के दोष) से कोई राधिका की निन्दा करता है तो वह वाममार्गी, मूर्ख, पापी तथा हरिद्वेषी है। ऐसा व्यक्ति कुम्भीपाक नरक के तप्त तेल में सौ ब्रह्माओं की आयु पर्यन्त पकता रहता है; उसके वंश की हानि होती है और उसका सर्वनाश हो जाता है। वह रोगी और पतित होकर पग-पग पर विघ्न प्राप्त करता है। हरि ने ब्रह्मक्षेत्र में ब्रह्मा से यह कहा था और मैंने ब्रह्मा से सुना है ॥ ६-१० ॥

There's a R■dh■ Sahasranama stotra in Narada pancharatra as well

श्रीमहादेव उवाच ।

शृणु देवि विचित्रार्थां कथां पापहरां शुभाम् ।
नास्ति जन्मानि कर्माणि तस्या नूनं महेश्वरि ॥ ५ ॥
यदा हरिश्चरित्राणि कुरुते कार्यगौरवात् ।

तदा विधातृरूपाणि हरिसान्निध्यसाधिनी ॥ ६ ॥
तस्या गोपीत्वभावस्य कारणं गदितं पुरा ।
इदानीं शृणु देवेशि नाम्नां चैव सहस्रकम् ॥ ७ ॥

श्री महादेवजी बोले : हे देवी, परमेश्वरी ! अब उस विचित्र अर्थ वाली, पापहारक और शुभ कथा को सुनो। हे महेश्वरी ! उनके लिये न तो जन्म है और न कर्म। जब श्रीहरि अपने कार्यगौरव के लिये स्वयं अवतार लेते हैं तब वे हरिसान्निध्यसाधिनी भी विधातृ के रूप में अवतार लेती हैं। हे देवेशि ! उनके गोपीरूप ग्रहण करने का कारण मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ। अब उनके सहस्रनामों को सुनो ॥ ५-७ ॥

यन्मया कथितं नैव तन्त्रेष्वपि कदापि न ।
तव स्नेहात् प्रवक्ष्यामि भक्त्या धार्यं मुमुक्षुभिः ॥ ८ ॥
मम प्राणसमा विद्या भाव्यते मे त्वहर्निशम् ।
शृणुष्व गिरिजे नित्यं पठस्व च यथामति ॥ ९ ॥
यस्याः प्रसादात् कृष्णस्तु गोलोकेशः परःप्रभुः ।
अस्या नामसहस्रस्य ऋषिर्नारद एव च ॥ १० ॥
देवी राधा परा प्रोक्ता चतुर्वर्गप्रसाधिनी ।

अब मैं तुम्हारे स्नेह के कारण वह बता रहा हूँ जिसे मुमुक्षुओं को भक्तिपूर्वक धारण करना चाहिये और जिसे पहले किसी भी तन्त्र में नहीं कहा गया है। यह विद्या मेरे प्राण के समान है और मैं अहर्निश इसका ध्यान करता हूँ। हे गिरिजे ! अब अपनी इच्छा के अनुसार उसे सुनो तथा उसका ध्यानपूर्वक नित्य पाठ करो। उन्हीं (राधिका) के प्रसाद से गोलोकेश श्रीकृष्ण परमप्रभु हुये हैं। उनके इस सहस्रनाम के ऋषि नारद हैं और चतुर्वर्गप्रसाधिनी राधा उसकी परा देवी हैं। सहस्रनाम इस प्रकार है ॥ ८-१०½ ॥

Narada pancharatra also has R■dh■ Kavach and her mantra

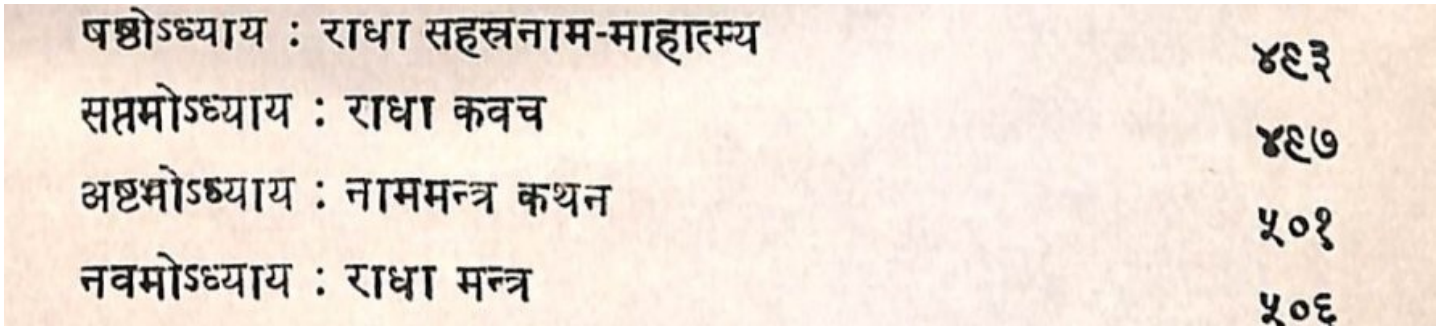

षष्ठोऽध्याय : राधा सहस्रनाम-माहात्म्य ४९३
सप्तमोऽध्याय : राधा कवच ४९७
अष्टमोऽध्याय : नाममन्त्र कथन ५०१
नवमोऽध्याय : राधा मन्त्र ५०६

Brahma vaivart Pur■■a Says Lord Krishna is Maa R■dh■'s everything

कृष्णः पीताम्बरः कंसध्वंसी च विष्टरश्रवाः।
देवकीनन्दनः श्रीशो यशोदानन्दनो हरिः॥७५॥
सनातनोऽच्युतोऽनन्तः सर्वेशः सर्वरूपधृक्।
सर्वाधारः सर्वगतिः सर्वकारणकारणम्॥७६॥
राधाबन्धू राधिकात्मा राधिकाजीवनः स्वयम्।
राधाप्राणो राधिकेशो राधिकारमणः स्वयम्॥७७॥
राधिकासहचारी च राधामानसपूरणः।
राधाधनो राधिकाङ्गे राधिकासक्तमानसः॥७८॥
राधिकाचित्तचोरश्च राधाप्राणाधिकः प्रभुः।
परिपूर्णतमं ब्रह्म गोविन्दो गरुडध्वजः॥७९॥
नामान्येतानि कृष्णस्य श्रुतानि मन्मुखाद्धृदि।
जन्ममृत्युहराण्येव रक्ष नन्द शुभेक्षण॥८०॥

Lord Kṛṣṇa is also known with the names of Kṛṣṇa, *pītāmbara,* Kaṁsadhvaṁsī, Viṣṭ araśravāḥ, Devakīnandana, Śrīśa, Yaśodā-nandana, Hari, Sanātana, Acyuta, Ananta, Sarveśa, the one who takes to any form, the base of everyone, omnipresence, the cause of all, the cause, the beloved of Rādhā, the soul of Rādhā, the life of Rādhā, the one who enjoys company of Rādhā, the companion of Rādhā, the one who fulfils the desires of Rādhā , the treasure of Rādhā , limb of Rādhā the one whose mind is attracted towards Rādhā, the one who steals away the mind of Rādhā, one who protects the life of Rādhā, the great lord, the complete Brahman, Govinda, Garuḍa-dhvaja and Kṛṣṇa which you have listened from my mouth. You keep them in mind. O virtues Nanda, these names steal away the life and death from a person.

Maa Radharani is one of the 5 Goddess of Prakriti.

नारद उवाच

गणेशजननी दुर्गा राधा लक्ष्मी: सरस्वती।
सावित्री वै सृष्टिविधौ प्रकृति: पञ्चधा स्मृता॥ १॥

Nārada said— Durgā, the mother of Gaṇeśa, Rādhā, Lakśmī, Sarasvatī and Sāvitrī are known as the five goddesses of Prakṛti. The creation is dependent on them.

Maa R■dh■ doesn't want to be separated from Lord Krishna for even a single moment.

Rādhikā said-O lord, you kindly listen to a small servant like me. O lord my life is burning all the time and the mind is unstable. I am unable to separate from you even when close my eyes or even winking there for a moment. how shall I be able to move on to the earth alone without you?

कियत्कालान्तरेणैव मेलनं मे त्वया सह।
प्राणेश्वर ब्रूहि सत्यं भविष्यत्येव गोकुले॥१९१॥

O lord of my life, tell me truthfully the period after which both of us would unite in Gokula.

निमेषं च युगशतं भविता मे त्वया विना।
कं द्रक्ष्यामि क्व यास्यामि को वा मां पालयिष्यति॥१९२।
मातरं पितरं बन्धुं भ्रातरं भगिनीं सुतम्।
त्वया विनाऽहं प्राणेश चिन्तयामि न कंचन॥१९३॥

Without you a moment is like a *yuga* for me. Whom shall I look at on earth. Where shall I go? O lord of my life, with you I never bother about my mother, my father, my relatives, my brothers, my sister and even the son.

Lord Krishna says that He is nothing without Maa R■dh■ and She is dearest to him .

विना मृदा घटं कर्तुं यथा नालं कुलालकः।
विना स्वर्णं स्वर्णकारोऽलंकारं कर्तुमक्षमः।।२२०।।

As a potter cannot make a pitcher without the clay and the goldsmith cannot make any ornament without the gold, similarly I become helpless without you.

स्वयमात्मा यथा नित्यस्तथा त्वं प्रकृतिः स्वयम्।
सर्वशक्तिसमायुक्ता सर्वाधारा सनातनी।।२२१।।
मम प्राणसमा लक्ष्मीर्वाणी च सर्वमङ्गला।
ब्रह्मेशानन्तधर्माश्च त्वं मे प्राणाधिका प्रिया।।२२२।।
समीपस्था इमे सर्वं सुरा देव्यश्च राधिके।
एभ्योऽप्यधिका नो चेत्कथं वक्षःस्थलस्थिता।।२२३।।

As the soul is eternal, similarly you as Prakṛti are also eternal. You are the base of all the strength and are everlasting. Lakṣmī, Sarasvatī, Pārvatī, Brahmā, Śiva, Śeṣanāga and Dharma are all like my life but you are dearer to me then my life. O Rādhā, all these gods and goddesses live with me. Had you not been dearest to me than all of them, then how could you reside in my heart.

Padma Purana mentions Greatness of Radha Ashtami

CHAPTER SEVEN

The Greatness of Rādhāṣṭamī

Śaunaka said:

1. O very wise one, O you very intelligent one, tell me due to which act a man goes to the world of cows from the ocean of the mundane existence which is difficult to cross and, O Sūta, about Rādhāṣṭamī and its excellent importance.

Sūta said:

2. O brāhmaṇa, O great sage, formerly Nārada had asked this from Brahmā. Listen, in brief, to what he had asked him.

Nārada said:

3-5. O grandsire, O very wise one, O best among those who know all the sacred texts, O dear one, tell me (about) Rādhājanmāṣṭamī. O lord, what is its religious fruit? Who observed it in olden days? O brahman, what would be the sin of those men who do not observe it? In what way is the vow to be observed?

When is it to be observed? Tell me (all) that from the beginning, from whom Rādhā was born.

Brahmā said:

6-12. O child, listen very attentively to (the description of the vow of) Rādhājanmāṣṭamī. I shall tell you in brief the entire (account). O Nārada, except Viṣṇu it is not possible (for anyone) to tell about its meritorious fruit. That sin like the murder of a brāhmaṇa, of them who have earned it through a crore of existences, perishes in a moment, (when) they devoutly observe it (i.e. the vow). The religious merit of Rādhājanmāṣṭamī is hundred times more than the fruit which a man obtains by observing (a fast on) a thousand Ekādaśī (days). The merit due to Rādhāṣṭamī observed (but) once, is hundred times more that the fruit obtained by giving gold equal to the Meru (mountain). People obtain that fruit from the Rādhāṣṭamī, which (merit) they obtain by giving a thousand virgins (in marriage). A man gets that fruit of the Aṣṭamī of the beloved of Kṛṣṇa (i.e. Rādhāṣṭamī), which he would get by bathing in holy places like Gaṅgā. (Even) a sinner who observes this vow casually or devoutly, would along with a crore members of his family go to Viṣṇu's heaven.

Skanda Pur■■a also mentions Maa R■dh■ Several times

6. O Brāhmaṇa, I, who am such (as described above) accompanied by Rādhā and Lakṣmī always stay in this imperishable residence along with my dependents.

Both Nimbarka sect and Gaudiya Sect Worships R■dh■-Krishna as well

Conclusions :

1 Maa R■dh■ exists and can't be separated from Lord Krishna.

2.Her appearance is referred as Lotus like

3. She is Shakti of Lord Krishna.

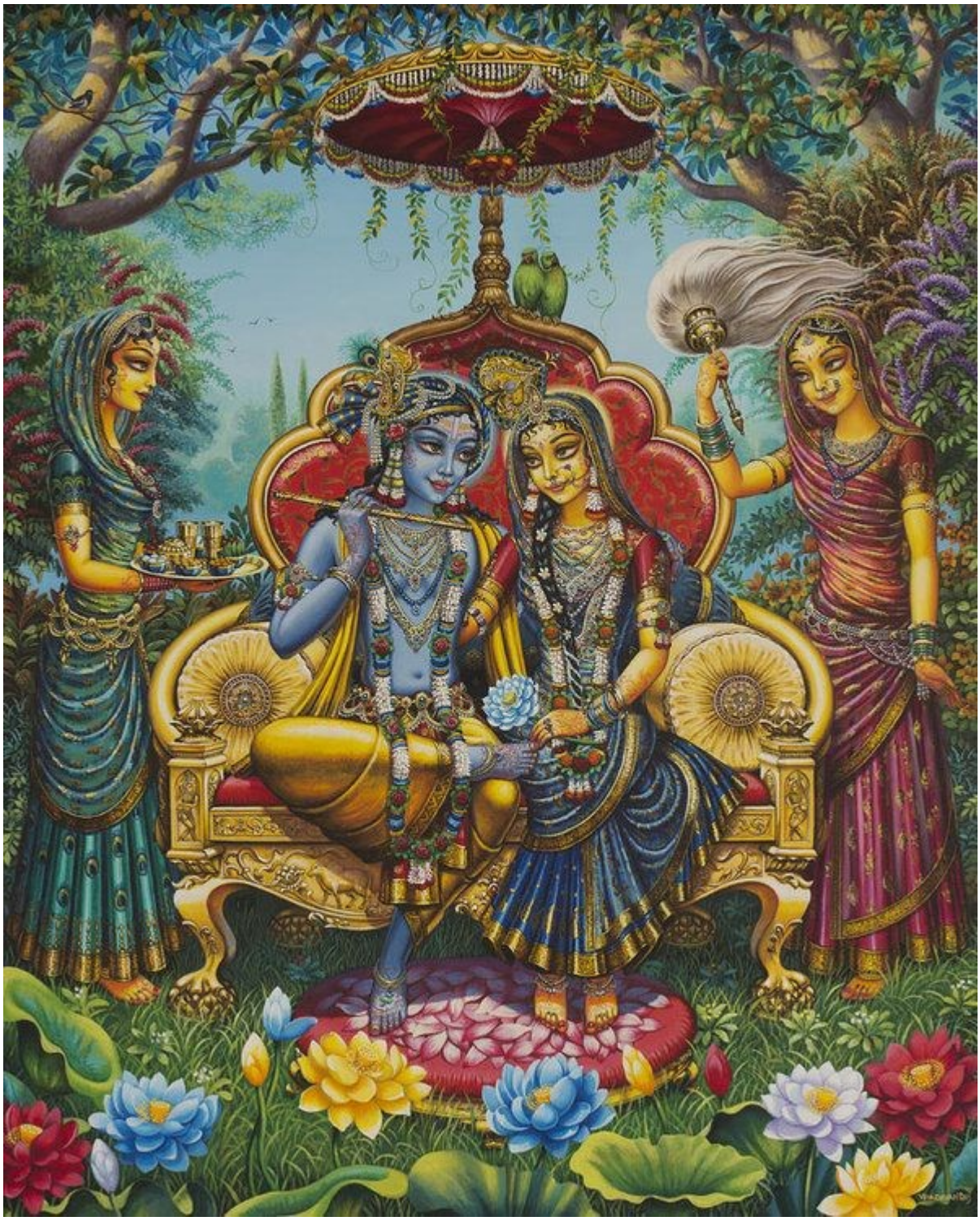

Source : Brahma vaivart Pur■■a by parimal publications

Skanda and Padma puranas by Motilal

Narada pancharatra by prachya Prakashan

Garh Samhita by gitapress.

All of you will understand this image well.